फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 205 जुलाई 2005

कहत कबीर

पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण जीवन गहरे, दीर्घ, व्यापक सम्बन्धों में है। कदम-कदम पर होड़ से बचने के प्रयास, इक्कीस बनने के फेर में नहीं पड़ना पूर्ण जीवन की ओर कदम हैं।

मसला यह व्यवस्था है (7)

इस-उस नीति, इस-उस पार्टी, यह अथवा वह लीडर की बातें शब्द-जाल हैं, शब्द-आडम्बर हैं

★ राजे-रजवाड़ों के दौर में, बेगार-प्रथा के दौर में मण्डी-मुद्रा का प्रसार कोढ में खाज समान था। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के इंग्लैण्ड-वेल्स-स्कॉटलैण्ड-आयरलैण्ड में भेड़ों ने, भेड़-पालन ने मनुष्यों को जमीनों से खदेड़ा। कैदखानों में जबरन काम करवाने, दागने, फाँसी देने के संग-संग बेघरबार किये गये लोगों को दोहन-शोषण के लिये दूरदराज अमरीका-आस्ट्रेलिया जैसे स्थानों पर जबरन ले जाया गया। उन स्थानों के निवासियों के लिये तो जैसे शामत ही आ गई हो। गुलामी जिनकी समझ से बाहर की चीज थी उन अमरीकावासियों के कत्लेआम किये गये। अफ्रीका से गुलाम बना कर लोगों को अमरीकी महाद्वीपों में काम में जोता गया। ★ फैक्ट्री-पद्धति ने मण्डी-मुद्रा के ताण्डव को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली फैक्ट्री-पद्धति को भाप-कोयले ने, भाप-कोयला आधारित मशीनरी ने स्थापित किया। इसके संग दस्तकारी और किसानी की मौत, दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत आरम्भ हुई। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के कारखानों में 6-7 वर्ष के बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम में जोता गया और ... और बेरोजगार बने-बनते लाखों लोगों के लिये अनजाने, दूरदराज स्थानों को पलायन मजबूरी बने। ★ फ्रान्स-जर्मनी-इटली... में फैक्ट्री-पद्धति के प्रसार के संग वहाँ भी आरम्भ हुई दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत लाखों को मजदूर बनाने के संग-संग यूरोप से बड़े पैमाने पर लोगों को खदेड़ना भी लिये थी। अमरीका.... आस्ट्रेलिया... लोगों से "भर गये"। ★ बिजली ने रात को भी काम के लिये खोल दिया। फैक्ट्री-पद्धति ने हमारी नींद ही नहीं उड़ाई बल्कि मारामारी का वह अखाड़ा भी रचा कि 1914-19 के दौरान ढाई करोड़ लोग और 1939-45 के दौरान पाँच करोड़ लोग तो युद्धों में ही मारे गये। ★ अब फैक्ट्री-पद्धति में यह इलेक्ट्रोनिक्स का दौर है। फैक्ट्री-पद्धति का प्रसार पृथ्वी के कौने-कौने में और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। इस दौर में एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत तीव्र गति से हो रही है। भारत के, चीन के करोड़ों तबाह दस्तकार-किसान कहाँ जायें? इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा दुनियाँ-भर में बेरोजगार कर दिये गये, बेरोजगार किये जा रहे करोड़ों मजदूर कहाँ जायें?

"मसला यह व्यवस्था है" के क्रम 3, 4, 5, 6 में हम ने विद्यालय-शिक्षा और अक्षर-अंक के सामाजिक सार व सन्दर्भ पर कुछ चर्चा की है। इधर एक मित्र से हमें उदयपुर से प्रकाशित "स्वपथगामी" के कुछ अंक मिले हैं। पत्रिका के जनवरी 05 अंक में विद्यालयों में पिलाई जाती जहर-भरी घुट्टियों का विवरण विचारणीय है।

सर्वग्रासी हिंसक विश्व व्यवस्था में इज्जत के साथ जीवन बसर करने के लिये मनीष बारह वर्ष से मनन-मन्थन कर रहे हैं। इस दौरान अनुभव उन्हें कई "सच्चाइयों" पर प्रश्न उठाने और उन "सच्चाइयों" की असलियत को उजागर करने में ले गये। लोगों को असहाय बनाने और मोहरों के तौर पर इस्तेमाल करने के लिये जटिल ताने-बाने हैं। जो शिक्षा दी गई है, जो सिखाया गया है उससे पिण्ड छुड़ाना सीधे-सच्चे जीवन के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता है। असत्य को त्याग कर ही सत्य के मार्ग पर बढ सकते हैं। परिवार, विद्यालय, रेडियो-टी वी-अखबार-पत्रिकाओं, मण्डी अर्थव्यवस्था, सरकारों, धार्मिक संस्थाओं आदि द्वारा फैलाई जा रही झूठों को लोगों द्वारा आपस में साझा करने के आग्रह के साथ मनीष "10 झूठ जो मेरे स्कूल ने मुझे सिखाई" में कहते हैं –

• **झूठ** 10 : विज्ञान और टैक्नोलॉजी हमारी सब समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

झूठ 9 : बड़े बमें और विशाल फौजें हमें सुरक्षा और शान्ति देंगे।

झूठ 8 : होड़ और लालच हमारे उत्तम गुणों को सामने लायेंगे। मैं तभी जीत सकता हूँ जब दूसरे लोग हारें।

झूठ 7 : सिर्फ संसदीय जनतन्त्र ही अधिक न्यायपूर्ण व स्वतन्त्र समाज की ओर ले जा सकता है। संसदीय लोकतन्त्र लोगों को वास्तविक वाणी देता है और निर्णय करने की प्रक्रिया में चुनने के लिये जनता को असली विकल्प देता है।

ऊँच-नीच। आधुनिक ऊँच-नीच। अखाड़ा-मण्डी। विश्व मण्डी। होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन का सर्वग्रासी अभियान। स्वयं मनुष्यों का मण्डी में माल बन जाना। यह है वर्तमान समाज व्यवस्था।

झूठ 6 : जीवन और खुशी पैसों के इर्द-गिर्द घूमते हैं। पैसों के बिना आप कुछ भी मतलब का नहीं कर सकते। अगर अमीर अधिक अमीर होते हैं और सकल राष्ट्रीय उत्पाद बढता है तो किसी दिन बाकी समाज के पास भी लुढक कर लाभ पहुँचेंगे। इसलिये यह गरीबों के लिये अच्छा है कि अमीर अधिक अमीर बनें व अधिक उपभोग करें।

झूठ 5 : अमरीका और यूरोपीय देश "विकसित" राष्ट्र हैं। अमरीका और यूरोपीय देश पैसों में सम्पन्न हैं क्योंकि उनके लोग अधिक तेज-तर्रार व मेहनत करने वाले हैं। दुनियाँ के बाकी हिस्सों में लोग गरीब हैं क्योंकि वे आलसी व बेवकूफ हैं।

झूठ 4 : मानव प्रकृति से अलग है। प्रकृति को फतह करना, प्रकृति पर नियन्त्रण स्थापित करना, प्रकृति का दोहन करना ताकि मानव प्रगति कर सकें। अपने प्राकृतिक संसाधनों और अपने समुदाय की देखभाल के लिये आम लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता – सिर्फ विशेषज्ञ ही यह करने के योग्य हैं।

झूठ 3 : आज विश्व के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या फालतू आबादी है। अगर गरीब लोग बस बच्चे पैदा करने बन्द कर दें तो सब कुछ ठीक हो जायेगा।

झूठ 2 : अंग्रेजी एक उच्चतर कोटि की भाषा है और मेरी स्थानीय भाषा मेवाड़ी निम्नतर कोटि की, पिछड़ी व असभ्य भाषा है।

झूठ 1 : भारत 1947 में स्वतन्त्र हुआ और मैं एक आजाद मनुष्य हूँ।

(सम्पर्क : स्वपथगामी द्वारा शिक्षान्तर
21 फतेहपुरा, उदयपुर –31300+
मनीष का ई-मेल <manish @ swaraj.org>
सामग्री का हम ने अंग्रेजी से अनुवाद किया है।)

(जारी)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37–40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7–10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ● हरियाणा में सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा इस समय अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी पर 90 रुपये 13 पैसे और महीने में 4 छुट्टी पर 2343 रुपये 37 पैसे;

एयरमैन कूरियर, 54 नीलम फ्लाईओवर, में मई की तनखा 15 जून तक नहीं; **साई इंजिनियरिंग,** एम-100 एन एच-5, में हैल्पर की तनखा 1300 रुपये; **विनायक फैब्रिक,** 109-10 सै-25, में 12-12 घण्टे की शिफ्ट, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से; **नैपको बेवल गियर,** 20/4 मथुरा रोड, में मई की तनखा 18 जून तक नहीं, जनवरी से देय डी.ए. भी नहीं दिया है; **दिल्ली फोर्ज,** 111 सै-25, में सुबह 8 से रात 8 तक 12 घण्टे की शिफ्ट और फिर रात 12 बजे तक रोक लेते हैं — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; **बाकमैन,** 10 सै-6, में हैल्पर को 8 घण्टे के 70 रुपये, 12-12 घण्टे की शिफ्ट, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से; **ओरियन्ट स्टील,** 20/1 मथुरा रोड, में मई की तनखा 15 जून तक नहीं; **परफैक्ट पैक,** सै-24, में 12-12 घण्टे की शिफ्ट, हैल्पर की तनखा बताते 1800 हैं पर देते 1600 रुपये हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; **बॉक्स एण्ड कार्टन इन्डस्ट्रीज,** 16/2 मथुरा रोड, में ठेकेदार के जरिये रखी महिला मजदूरों की तनखा 1200-1300 रुपये और पुरुषों की 1400-1500, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं; **अल्फा टोयो,** 9 एच सै-6, में ठेकेदार के जरिये रखे 350 मजदूरों को मई की तनखा 15 जून तक नहीं; **भगवानदास रोलिंग मिल,** सै-6, में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 1800 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं; **एस.पी.एल.,** 7,21,22 सै-6, में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को मई की तनखा 15 जून तक नहीं, 12-12 घण्टे की शिफ्ट, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं; **पंजाब रोलिंग मिल,** 150-1 सै-24, में 13 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में हैल्परों की तनखा 2100 रुपये, ई.एस. आई. व पी.एफ. नहीं; **ब्रॉन लैबोरेट्री,** 13 इन्ड. एरिया, में मई की तनखा 15 जून तक नहीं; **अम्बिका फोरजिंग,** 365 सै-24, में हैल्पर की तनखा 1700 रुपये, ई.एस.आई. है पर पी. एफ. नहीं, मैनेजर गाली देता है; **एजीको,** 20/8 इन्ड. एरिया, में हैल्पर की तनखा 1700 रुपये, मई की तनखा 14 जून तक नहीं; **विजय ऑटो,** सै-24, में हैल्पर की तनखा 1400 और ऑपरेटर की 1800 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, मई की तनखा 11 जून तक नहीं; **सिकन्द लिमिटेड,** 61 इन्ड. एरिया, में अप्रैल की तनखा 3 जून को जा कर दी, मई का वेतन 14 जून तक नहीं; **एच.जे. इंजिनियरिंग,** 352 सै-24, में हैल्परों को तनखा 1600-1700 रुपये, ई.एस.आई. है पर पी.एफ. नहीं, तनखा किस्तों में — मई की 10 जून तक शुरू भी नहीं; **नूकेम केमिकल डिविजन,** 54 इन्ड. एरिया, में मई की तनखा 14 जून तक नहीं; **एक्युटेक आटो,** 233 सै-24, में हैल्परों की तनखा 1300 रुपये और ऑपरेटरों की 1800-3000 रुपये; **गुडईयर टायर,** मथुरा रोड, में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को मई की तनखा 11 जून तक नहीं; **मास्टर टूल्स,** 9 बी सै-6, में हैल्परों की तनखा 1200-1400 और ऑपरेटरों की 1500-1600 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, पावर प्रेस पर हाथ कटते रहते हैं — प्रायवेट में इलाज करवाते हैं; **चौकस सेक्युरिटी** में 12 घण्टे ड्युटी पर महीने के 2200 रुपये गार्ड को; **क्लच ऑटो,** 12/4 मथुरा रोड, में मई की तनखा 14 जून को एक शिफ्ट के सब मजदूरों को भी नहीं दी, आधे से ज्यादा मजदूरों को 16 जून तक तनखा नहीं; **श्याम टैक्स इन्टरनेशनल,** 4 सै-6, में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को अप्रैल की तनखा 25 मई से 1 जून तक दी, मई का वेतन 18 जून तक नहीं; **भाई मिक्सर,** 20/4 मथुरा रोड, में भर्ती के लिये 500 रुपये रिश्वत लेते हैं;.....

बातें कुछ विस्तार से ..(पेज तीन का शेष)

जून तक नहीं दिया है।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम मजदूरों को पीने के पानी की भारी समस्या है — स्टाफ के लिये कम्पनी 100 बड़ी बोतल रोज मँगाती है। पानी की समस्या लैट्रीन-बाथरूम में भी है। मई की तनखा आज 16 जून तक नहीं दी है।"

स्टार वर्ल्ड वरकर : "गुरुकुल में स्थित फैक्ट्री में बहाने ढूँढ कर पुराने मजदूर निकाले जा रहे हैं और नये भर्ती कर रहे हैं। पहले 8 घण्टे पर हैल्पर को महीने के 1900 रुपये देते थे पर अब 12 घण्टे पर 1900 देने लगे हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सुरभि इंजिनियरिंग मजदूर : " 318 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1400 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। एक्सीडेन्ट में हाथ कटने के बाद लरनर का पत्र देते हैं और पीछे की तारीख से ई.एस.आई. करवाते हैं।"

दिल्ली से-.. (पेज चार का शेष)

खाली करवा रही है। नोएडा में काम करने वालों से हम ने पूछा तो उन्होंने बताया कि वहाँ कोई मशीन खाली नहीं है। इधर 25 जून से ही कम्पनी हमें फैक्ट्री में खाली बैठाने लगी है। पहली जुलाई को 'बी-26 ओखला फेज-I में काम नहीं होने के कारण कुछ समय के लिये नोएडा भेजा जा रहा है' लिखे ट्रान्सफर लैटर स्थाई मजदूरों को देने की मैनेजमेन्ट ने असफल कोशिश की। पिछले वर्ष सितम्बर में भी ऐसी ही बातें हुई थी और यहाँ से ट्रान्सफर लैटर के साथ नोएडा फैक्ट्री गये 25 मजदूरों को महीने-डेढ महीने में नौकरी से निकाल दिया था। यह बात हम सब जानते हैं। हफ्ते-भर से खाली बैठा कर फैक्ट्री में रखे जाते हम 500 मजदूर 'क्या करें? कैसे करें?' के बारे में चर्चायें कर रहे हैं।"

एक्सप्लिसिट लैदर वरकर : "ए-279 ओखला फेज-I स्थित फैक्ट्री में आने का समय है, जाने का नहीं। शिफ्ट सुबह 9½ से साँय 6 की है पर रात 9 बजे तक तो रोकते ही रोकते हैं और फिर रात 12-1 बजे तक भी रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1200-1500-2000 रुपये है। फैक्ट्री में 100 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 8-10 के ही हैं। दो रजिस्टर बना रखे हैं। अधिकारी आते हैं तब अधिकतर मजदूरों को फैक्ट्री के बाहर कर देते हैं। गेटपास पर कम्पनी की मोहर नहीं लगाते — रात को इस कारण पुलिस से अतिरिक्त परेशानी होती है। मई की तनखा 14 जून को दी। बोनस कम्पनी देती ही नहीं। दहशत बनाये रखने के लिये कम्पनी गुण्डे का सहारा लेती है।"

इंडियन आर्टवेयर कारपोरेशन मजदूर : " ए-75 ओखला फेज-II स्थित फैक्ट्री की बेसमेन्ट में 1993 में हम पीतल पर पॉलिश का काम करते थे। हमें कारीगर का ग्रेड नहीं देते थे। खतरे का काम था, चोटें लगती रहती थी पर ई.एस.आई. नहीं थी। पी.एफ. भी नहीं। सूखे रसायन व गर्द का काम था फिर भी वर्दी नहीं, गुड़ नहीं..... अपनी परेशानियाँ कम करने के लिये हम एक यूनियन से जुड़े। इस पर 6 जून 93 को हम 4 को मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री से निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत — 17 जून को हमें ड्युटी पर रख लिया। लेकिन 10 जुलाई 93 को हमें फिर नौकरी से निकाल दिया। श्रम विभाग में फिर शिकायत। ड्युटी पर नहीं लिया। मामला तीस हजारी श्रम न्यायालय में गया और वहाँ से दो बार समझौते के लिये फिर श्रम विभाग भेजा गया। समझौता नहीं हुआ। अब मामला कड़कड़डुमा श्रम न्यायालय में है। हमें श्रम विभाग-श्रम न्यायालय के चक्कर काटते 12 वर्ष हो गये हैं — अब तक निर्णय नहीं हुआ है।"

विनाश का चेहरा........ (पेज चार का शेष)

दबे-कुचलों पर जकड़-नियन्त्रण कसने के वास्ते बिचौलियों की फौज पालना इस राजनीतिक अर्थशास्त्र के आधार-स्तम्भ हैं।

विरोध कैसे करें? कैसे लड़ें? दलदल में फँस कर सिर और न फुड़वा बैठें से बचने की राहें कौनसी हैं? हमारे विचार से इस सन्दर्भ में बिचौलियों की लीपापोतियों को पहचानना-खारिज करना प्रस्थान-बिन्दू है। समय राजनीतिक अर्थशास्त्र की जन-जन द्वारा आलोचना का है, तन-मन-मस्तिष्क से आलोचना का वक्त है। आँसू बहाने, छाती पीटने के पार जाने की आवश्यकता है।

(मुम्बई के बारे में जानकारियाँ "मजदूर एकता लहर" के 16-30 जून 05 अंक से ली हैं।)

बातें कुछ विस्तार से

सुपर फाइबर मजदूर : "57 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित जूट मिल में रोज भर्ती होती है। पाँच दिन काम करते हो जाते हैं तब कार्ड बनाते हैं। फैक्ट्री में बहुत ही गन्दा काम है और सुपरवाइजर/जॉबर दुर्व्यवहार करते हैं। ऐसे में कई मजदूर 5 दिन टिकते ही नहीं और छोड़ देते हैं — उन्हें किये काम के पैसे कम्पनी नहीं देती। साल-भर कोई टिका रहता है तब उसकी ई.एस.आई. करवाते हैं पर पी.एफ. तब भी नहीं। बिना ई.एस.आई. वालों के फैक्ट्री में चोट लगने पर एक दिन कम्पनी इलाज करवाती है और फिर मजदूर अपने पैसे खर्च करे। फैक्ट्री में 8 घण्टे की बजाय 10 घण्टे की ड्युटी जारी है और साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। दस घण्टे काम के बदले हैल्पर को 86½ रुपये कम्पनी अप्रैल तक देती थी, अब मई में यह 90 रुपये किये हैं। ऑपरेटरों को 10 घण्टे के 105, 115 और 120 रुपये देते हैं। काम करते समय तबीयत खराब हो जाती है तब भी छुट्टी नहीं देते। फैक्ट्री में गर्दा बहुत ज्यादा है — पटसन के रेशे पूरी फैक्ट्री में उड़ते रहते हैं और साँस की अनेकों बीमारियाँ लिये हैं। सुपरवाइजर/जॉबर गालियाँ तो देते ही हैं, अपना रौब जमाने के लिये यूँ ही धक्के भी मार जाते हैं।"

एस.पी.एल. स्वैटर डिविजन वरकर: "15/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जब कभी माल नहीं होता तब ड्युटी से वापस कर देते हैं और उस दिन के पैसे नहीं देते। फैक्ट्री में 2000 मजदूर हैं और सब की तनखा में से कम्पनी ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटती है पर सिर्फ 500 मजदूरों को ही ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं, फण्ड की पर्ची देते हैं। फैक्ट्री में काम का बोझ बहुत-ही ज्यादा है। सुपरवाइजर हर समय सिर पर खड़े रहते हैं, धमकी देते हैं, गाली देते हैं, गार्ड बुला कर गेट बाहर कर देते हैं। भारी तनाव में काम करना पड़ता है। फैक्ट्री गेट पर गार्ड अलग से नखरे करते हैं, बदतमीजी करते हैं — 11 जून को रात 1 बजे ड्युटी से छूटते एक सिलाई कारीगर से गेट पर गार्ड ने मारपीट की और मामला पुलिस में गया। तनखा देरी से — मई की तनखा 15 जून को दी।"

सरला फैशन गारमेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 1 सैक्टर-28 में शाही एक्सपोर्ट के अन्दर स्थित इस कम्पनी में निर्धारित उत्पादन इतना है कि ड्युटी के दौरान पूरा नहीं होता। काम पूरा करने के नाम पर महिला मजदूरों को ड्युटी के बाद रोक लेते हैं और उस समय के कोई पैसे नहीं देते। एतराज करने पर नौकरी से निकालने की धमकियाँ। फैक्ट्री में पानी-पेशाब के लिये पास लेना अनिवार्य कर रखा है। दो इन्चार्ज तो मजदूरों को ज्यादा ही परेशान करते हैं।"

चाँद इन्डस्ट्रीज वरकर : "7 बी मार्केट 1 स्थित फैक्ट्री में 50 पक्के और 100 कच्चे मजदूर काम करते हैं — कच्चों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं — रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय तक नहीं देती और 12 घण्टे बाद रोकने पर रोटी के पैसे भी नहीं। पाँच साल से बोनस नहीं दिया है। अप्रैल की तनखा 28 मई को जा कर दी और मई का वेतन आज 14 जून तक नहीं दिया है।"

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास वरकर: "64 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री से ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूरों को नवम्बर 04 में निकाल दिया — उन वरकरों की तीन महीनों की तनखायें नहीं दी हैं। स्टाफ की 8 महीनों की तनखायें बकाया खाते में। फैक्ट्री में रह गये 180 स्थाई मजदूरों पर काम का भारी बोझ और 6 महीने का उत्पादन इन्सेन्टिव तथा 16 महीनों के ओवर टाइम के पैसे नहीं दिये। मार्च और अप्रैल की तनखायें भी बकाया हो गई तो असन्तोष बढा — मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी है।"

एस्कोर्ट्स वरकर: "कम्पनी के अलग-अलग प्लान्टों में बरसों से हम 55-60 माली काम करते हैं। हम दूर-दूर काम करते हैं पर आपस में तालमेल रखते हैं। इधर कम्पनी ने ठेकेदार बदल कर हम से नये फार्म भरने को कहा। नौकरी पर खतरा भाँप कर हम ने आपस में चर्चायें की और नये फार्म भरने से इनकार कर दिया। इस पर मैनेजमेन्ट ने 7 जून को 12 मालियों का गेट रोक दिया पर फिर भी किसी माली ने नया फार्म नहीं भरा। कम्पनी ने उन 12 मालियों को ड्युटी पर ले लिया। यूनियन हम मालियों का साथ दे रही है।"

सुपीरियर इन्डस्ट्रीज मजदूर : "13/1 मथुरा रोड़ स्थित बीयर फैक्ट्री में हैल्परों को 12 घण्टे रोकते हैं। हैल्परों की ड्युटी ही 10 घण्टे कर रखी है और 2 घण्टे का ओवर टाइम देते हैं — सिंगल रेट से। हैल्पर को 10 घण्टे के 80-90 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में 100 मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 35-40 के ही हैं। मई की तनखा 15 जून को आधे मजदूरों को ही दी।"

व्हर्लपूल वरकर : "28-29 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम मजदूरों को 70 रुपये दिहाड़ी देते थे — साप्ताहिक छुट्टी नहीं। छह मई को सुनील का पावर प्रेस में हाथ कटा — ठेकेदार ने प्रायवेट में इलाज करवाया और कोई क्षतिपूर्ति नहीं दी। मई में ही त्रिलोक का फैक्ट्री में पैर टूटा — ठेकेदार ने फिर प्रायवेट में इलाज करवाया और कोई क्षतिपूर्ति नहीं दी। इधर 5 जून को व्हर्लपूल कम्पनी ने रंजन इन्टरप्राइजेज ठेकेदार का ठेका खत्म कर दिया है पर हमें मई की तनखा आज 15 जून तक नहीं दी है।"

फाइबर इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 100 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज काम पर महीने में हैल्परों को 2200 और ऑपरेटरों को 3000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। डायरेक्टर गाली देता है, मार भी देता है। गार्ड द्वारा फील्ड में जाने से इनकार करने पर 13 जून को डायरेक्टर ने गार्ड की पिटाई की और फिर पुलिस के हवाले कर दिया। रिलीवर के नहीं आने पर लगातार 36 घण्टे की ड्युटी।"

मनोज इंजिनियरिंग वरकर : "गुरुकुल में स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1500 और कारीगर की 2000-2500 रुपये है। फरवरी की तनखा में से 1000-1000 रुपये दिये और फिर मार्च, अप्रैल, मई की तनखायें आज 16 जून तक नहीं दी हैं। तनखा माँगने पर डायरेक्टर मारपीट पर उतर आता है।"

ध्रुव ग्लोबल मजदूर : "14 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हर रोज 12 घण्टे की ड्युटी है और साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। फैक्ट्री में काम करते 1500 मजदूरों में से 350 ही स्थाई हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 1800-2200 रुपये देते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में कैन्टीन है पर चाय 3 रुपये की — कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती।"

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज वरकर: "31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 1600 रुपये और ऑपरेटरों को 2000 रुपये देते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं — महीने में एक दिन छुट्टी कर लेते हैं तो उसके भी पैसे काट लेते हैं। वैसे फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक कप चाय भी 12 घण्टे में नहीं देते। ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं — चोट लगने पर ठेकेदार एक दिन इलाज करवाता है, फिर मजदूर अपने पैसे खर्च करे। अप्रैल की तनखा 20 मई को देनी शुरू की थी — मई का वेतन आज 15 **(बाकी पेज दो पर)**

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद—121001**

दिल्ली से-

जनवरी से देय डी.ए. की जून- अन्त तक दिल्ली सरकार द्वारा घोषणा ही नहीं। 8 घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर दिल्ली सरकार द्वारा जुलाई 04 से निर्धारित कम से कम तनखा हैल्पर के लिये 2863 रुपये और कारीगर के लिये 3287 रुपये महीना है।

ओरियन्ट क्राफ्ट मजदूर: "बी- 26 ओखला फेज- I स्थित फैक्ट्री से कम्पनी ने 20 जून को कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर निकालने शुरू किये। मात्र दिहाड़ी दे कर कम्पनी निकालती रही और 2 जुलाई तक करीब एक हजार मजदूर निकाल दिये। परन्तु 50 कैजुअल वरकर अड़ गये, इस्तीफे लिखने से इनकार कर दिया। इनमें से कुछ तो ओरियन्ट क्राफ्ट में 15- 20 दिन से ही काम कर रहे थे। **पिण्ड छुड़ाने के लिये कम्पनी ने 2 जुलाई को इन 50 कैजुअल वरकरों को एक महीने की नोटिस पे दे कर इनका हिसाब किया।** अब कम्पनी के निशाने पर हम 500 स्थाई मजदूर हैं।

"ओरियन्ट क्राफ्ट में दिसम्बर 04 से 20 जून 05 तक हर रोज ओवर टाइम काम हुआ। फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 6 की शिफ्ट है पर रात 2 बजे तक काम करवाते और हफ्ते में 2- 3 दिन तो सुबह 6 बजे तक रोक लेते — महिला मजदूरों को भी। हर रविवार को 9 से 6 फैक्ट्री में काम हुआ— होली, ईद, दशहरे की छुट्टियाँ कम्पनी खा गई, भविष्य में देने का कम्पनी ने लिखा भी था पर वह भविष्य अभी तक नहीं आया। इन 7 महीनों के दौरान हर मजदूर ने हर महीने 150- 175- 200 घण्टे ओवर टाइम काम किया पर कम्पनी महीने में मात्र 16 घण्टे का ही ओवर टाइम दिखाती रही— 16 घण्टे का डबल रेट से और बाकी का सिंगल दर से भुगतान। चेयरपरसन- मैनेजिंग डायरेक्टर मंजू धींगड़ा ने पिछले वर्ष कहा था कि महीने के 48 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान डबल रेट से किया जायेगा पर उनका कहा कहा ही रहा, उस पर अमल नहीं हुआ।

"ओरियन्ट क्राफ्ट में ढाई साल से कम्पनी कुछ ज्यादा ही गुण्डागर्दी कर रही है। एक डायरेक्टर अपने संग एक गुण्डा लाया था जिसके इशारे पर मैनेजर नाचता था। मोबाइल ले कर गुण्डा खड़ा हो जाता और मजदूरों से कहता कि जो रविवार को काम करने नही आयेगा वह सोमवार को हिसाब ले जाये। उस डायरेक्टर के साथ वह गुण्डा चला गया पर नया मैनेजर उसी ढर्रे को जारी रखे है। अधिकारियों के छापे के समय कम्पनी कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को फैक्ट्री से बाहर ही रखती है।

"ओरियन्ट क्राफ्ट में महीने- भर से खुसर- पुसर थी कि कम्पनी कुछ स्थाई मजदूरों को खाँडसा (गुड़गाँव) और कुछ को नोएडा भेजेगी। प्रोडक्शन मैनेजर ने 25 जून को हमें कहा कि यहाँ के मजदूरों के लिये कम्पनी नोएडा फैक्ट्री में 400 मशीनें **(बाकी पेज दो पर)**

विचारणीय

विनाश का मानवीय चेहरा

महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव के समय अक्टूबर 04 में प्रधान मन्त्री ने मुम्बई को चमकाने, एशिया का प्रथम नगर बनाने की बातें की। चुनाव जीतते ही, पार्टी के वादे से मुकर कर, राज्य सरकार ने दिसम्बर 04 में झुग्गी बस्तियाँ तोड़ना शुरू किया। पुलिस के संग बुलडोजर व अर्थमूवर मशीनों के जरिये **मुम्बई में दो महीनों में नब्बे हजार झुग्गियाँ तोड़ कर चार लाख लोग बेघर कर दिये हैं।** सरकार ने झुग्गियाँ तोड़ने पर 84 करोड़ रुपये खर्च किये.... और मुम्बई चमकाने के लिये सरकार ने 100 से ज्यादा 40 मंजिली इमारतें बनाने की अनुमति दे दी है। "मानवीय चेहरे के साथ विकास" वर्तमान केन्द्र सरकार का नारा है।

●औद्योगिक केन्द्र बनाने के वास्ते बहुत- ही सस्ते दामों पर मध्य- मुम्बई में जमीनें पट्टों पर दी गई थी। यहाँ 1854 में पहली कपड़ा मिल बनी। सन् 1981 में मुम्बई में ढाई लाख कपड़ा मिल मजदूर थे — आज बीस हजार से भी कम हैं।

●मजदूरों के निवास के लिये एक- कमरे वाली इकाइयाँ बनाना फैक्ट्रियों के लिये कानूनी अनिवार्यता था। मध्य- मुम्बई में बड़ी सँख्या में मजदूरों के वैध निवास अस्तित्व में आये। जमीनों के भाव बहुत बढ जाने पर फैक्ट्री चलाने की बजाय उस जमीन का धन्धा करना भारी मुनाफे का बना। ऐसे में "बीमार", कर्ज चुकाने, मजदूरों के बकाया का भुगतान आदि की आड़ में नियम बदलने आदि के एवज में मन्त्रियों को भारी रिश्वतों के जरिये कपड़ा मिलों की जमीनें बेचने का धन्धा 15 वर्षों से जोरों पर है। मजदूरों को खदेड़ने के लिये मिलों में आग तक लगाई गई है ..... वैसे, पट्टों की अवधि खत्म होने के साथ कपड़ा मिलों की जमीनें पुनः सरकार की हो गई पर मिल मैनेजमेन्टों को उसे बेचने की अनुमति दे कर मन्त्री- अफसर- मिल मैनेजमेन्टें अवैध कमाई से भी मालामाल हो रहे हैं।

●आजादी .... 1947 से मजदूरों के लिये एक- कमरे के निवास बनाना भी बन्द। ऐसे में रेल लाइनों के किनारों के संग- संग मुम्बई में दलदल पाट कर मेहनतकशों ने निवास के लिये बस्तियाँ बनाई। मुम्बई में तीन हजार झुग्गी बस्तियों में 68 लाख लोग रहने लगे। इनके अलावा 27 हजार परिवार फुटपाथों पर धकेल दिये गये हैं। और, दिहाड़ी कम होती जाने के कारण नये मजदूरों के लिये अब शहर की झुग्गियाँ भी महँगी पड़ने लगी हैं इसलिये वे कार्यस्थलों से दूर शहर के बाहरी इलाकों में रहने को मजबूर हैं। शहर में जमीन के बढते भाव ने शहर की झुग्गी बस्तियों को खाली करवा कर वहाँ बहुमंजिली इमारतें बनाने को भी भारी मुनाफे वाला धन्धा बना दिया है। इसलिये इस- उस कटऑफ तारीख आदि की आड़ में झुग्गी- बस्ती तोड़ो अभियान.....

मुम्बई हो चाहे दिल्ली में ओखला, या फिर फरीदाबाद हो चाहे नोएडा : कारखानों के लिये सैक्टर/फेज/क्षेत्र इनकी योजनाओं में हैं। सुपरवाइजरों- मैनेजरों- अफसरों के निवास के लिये स्थान भी नगर योजना में हैं। **लेकिन कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के निवास के लिये योजनाओं में कोई स्थान है ही नहीं।** कारण? *मजदूरों के निवास पर खर्च कम करना मजदूर की लागत कम करना होता है। झुग्गियाँ- गन्दी बस्तियाँ बनवाने- बनाने देने की ओट में यह हवस छिपी रहती है। अहसान व रक्षा के नाम पर विभिन्न स्तर के बिचौलिये और उनके पट्ठे वसूली करते हैं। दमन- शोषण की व्यवस्था को लगभग मुफ्त में यह थाणेदार+ वकील मिल जाते हैं। और फिर, जब ऐसी किसी जगह की सिर- माथों पर बैठों को जरूरत पड़ जाये तब पीड़ितों को दोषी ठहराने व स्थान खाली करवाने में ज्यादा दिक्कतें नहीं होती।*

●फरीदाबाद में दिसम्बर 02- जनवरी 03 में सरकार ने बड़े पैमाने पर झुग्गी बस्तियाँ तोड़ो अभियान आरम्भ किया था। बिचौलियों के ज्यादा फेर में रही झुग्गी बस्तियाँ तोड़ दी गई। पर फिर, लोगों ने स्वयं बढते पैमाने पर विरोध में उतर कर अगस्त 03 में सरकार की योजना को बीच में ही रोक दिया।

●दिल्ली में संसदीय चुनाव के दौरान फरवरी- अप्रैल 04 में सरकार ने तेरह हजार झुग्गियाँ तोड़ कर 50 हजार लोग बेघर किये थे। बसेरा बचाने के फेर में 5 लोग मारे गये, हताशा में दो ने आत्महत्या की, हिंसा- आगजनी- हत्या के प्रयास के आरोप लगा कर पुलिस ने गिरफ्तारियाँ की.... दिल्ली में चुनाव- प्रक्रिया निष्पक्ष व शान्तिपूर्ण!

दरअसल, अवैध बस्तियों के बाशिन्दे वैध रिहाइश वालों के झाड़ू- पोंचा, बर्तन माँजने, कपड़े धोने, खाना बनाने के लिये ठीक थे- हैं.. .. सड़क- फ्लाइओवर- इमारत निर्माण के लिये भी ठीक थे- हैं..... फैक्ट्रियों- होटलों- क्लबों में काम करने के लिये भी यह लोग ठीक थे- हैं... ..लेकिन साहबों की भाषा में यह गन्दे लोग हैं, इनकी बस्तियाँ शहर पर बदनुमा दाग हैं, यह लोग प्रदूषण फैलाते हैं। और फिर, वैक्यूम क्लीनर-, वाशिंग मशीन- डिश वाशर के संग प्री- फैब्रीकेटेड सामग्री- इलेक्ट्रोनिक नियन्त्रण के इस जमाने ने बड़ी सँख्या में लोगों को व्यवस्था के लिये अनावश्यक बना दिया है, फालतू बना दिया है। शहर और गाँव, दोनों जगह, हर जगह व्यवस्था के लिये लोग फालतू हो गये हैं। ऐसे में जनता पर व्यवस्था के आक्रमण और बढेंगे।

किन्हीं के होने को ही गैर- कानूनी बना देने के पीछे एक पूरा राजनीतिक अर्थशास्त्र है। अधिक शोषण के लिये जीवन- स्तर गिराने और **(बाकी पेज दो पर)**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।